

कृषि के क्षेत्र में रोजगार के अवसर

धन सिंह¹, लालचंद कुमावत², अज्जद खान³ एवं सुरेश चन्द⁴

¹बागवानी विभाग, कृषि विज्ञान और ग्रामीण विकास स्कूल, नागालैंड विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय) मेदजिफेमा कैंपस- 797106

²विद्यावाचस्पति शोधार्थी सस्य-विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर- 313004

³पादप रोग विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर- 342026

⁴सस्य-विज्ञान विभाग, आर. बी (पी.जी) कॉलेज, डॉ भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा- 282004

परिचय

देश के ग्रामीण क्षेत्रों में लोग खेती के साथ-साथ कृषि आधारित उद्यम करके अपनी आय बढ़ाते हैं। इनमें मुख्य रूप से पशुपालन, डेयरी, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, वर्मी कम्पोस्ट यूनिट, मशरूम उत्पादन इकाई, खाद्य प्रसंस्करण इकाई, कृषि मशीनरी, बागवानी शामिल हैं। इसमें ग्रीनहाउस में एक बेमौसमी सब्जी इकाई स्थापित करना भी शामिल है। देश में बढ़ती आबादी के साथ-साथ बेरोजगारी की समस्या को चुनौती देते हुए युवा इन विकल्पों के साथ रोजगार पैदा कर सकते हैं। आज भी, ग्रामीण लोगों की आय मुख्य रूप से कृषि आय पर निर्भर है। भारत की जनसंख्या आजादी के समय 36 करोड़ से बढ़कर वर्ष 2023 में 142 करोड़ हो गई है। इतनी बड़ी आबादी को खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ पोषण सुरक्षा के तहत उचित प्रसंस्करण और विपणन के माध्यम से उपभोक्ता तक कृषि उत्पादों को पहुंचाने के लिए उपयोग किए जाने वाले साधनों के संदर्भ

में कृषि क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं।

पशुपालन एवं डेरी क्षेत्र: पशुपालन और डेयरी उद्योग के बिना भारतीय कृषि अधूरी है। युवा अच्छी नस्ल की गाय और भैंस का चयन कर इसे एक अच्छे डेयरी व्यवसाय के रूप में स्थापित कर सकते हैं। खेती और पशुपालन एक दूसरे के पूरक हैं। कृषि की लागत का एक हिस्सा जानवरों से उत्पादन पर निर्भर करता है। पशुओं का चारा फसलों से प्राप्त होता है। पशुओं से गोबर प्राप्त होता है। पशुओं के गोबर से प्राप्त गोबर गैस का उपयोग ईंधन के रूप में किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के दुग्ध उत्पादों जैसे दूध पाउडर, दही, छाछ, छाछ, टीज, पनीर आदि के उत्पादन और विपणन में लगी छोटे स्तर की डेयरियों, राष्ट्रीय स्तर पर कई राज्यों के दुग्ध संघों, डेयरी विकास बोर्ड जैसी संस्थाओं और चमड़ा आधारित उद्यमों के माध्यम से लोगों को रोजगार मिल रहा है। युवा पशुपालन और

डेयरी उद्योग में तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

पशुपालन में जुड़ी 5 बड़ी योजनाएं

- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम
- राष्ट्रीय पशुधन मिशन
- डेयरी इंटरप्रेन्योर डेवलपमेंट स्कीम
- राष्ट्रीय गोकुल मिशन
- राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम



वर्मीकम्पोस्ट: केंचुआ खाद को वर्मीकम्पोस्ट के नाम से भी जाना जाता है। केंचुआ खाद जल्द तैयार होने वाली एक उत्तम पोषक तत्व वाली खाद है। वर्मीकम्पोस्ट केंचुओं के द्वारा पशुओं से प्राप्त गोबर, वनस्पति एवं भोजन के बचे हुए कचरे के विघटन से तैयार की जाती हैं। इसके अंदर नाइट्रोजन, सल्फर और पोटाश जैसे तत्व ज्यादा मात्रा में पाए जाते हैं। केंचुआ खाद की एक खास विशेषता ये है की इसमें बदबू नहीं आती है। जिस कारण वातावरण प्रदूषित नहीं होता है।

भेड़-बकरी पालन: वर्ष 2012 में भेड़ और बकरी पालन में भेड़ और बकरियों की संख्या क्रमशः 65.07 और 135.17 मिलियन थी। यह वर्ष 2019 में बढ़कर 74.26 और 148.88 मिलियन हो गया। सामान्य तौर पर भेड़-बकरी पालन कम लागत में शुरू किया जा सकता है। इसी वजह से बकरियों को 'गरीब गाय' कहा जाता है। भेड़ के ऊन, चमड़े और उनके मांस

की देश के साथ-साथ विदेशों में भी भारी मांग है, जो रोजगार के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करता है।

मुर्गीपालन के क्षेत्र में रोजगार: देश की बढ़ती आबादी, रहन-सहन और खान-पान में बदलाव के कारण शाकाहारी वर्ग भी पोषण की दृष्टि से अंडे का इस्तेमाल करने लगा है। मुर्गी पालन, चिकन प्रसंस्करण को व्यावसायिक रूप से अपनाकर युवा रोजगार देश की आय में वृद्धि, देश के निर्यात और जीडीपी में प्रगति को बढ़ावा देता रहा है। सरकार द्वारा सब्सिडी के माध्यम से छूट देकर युवाओं को रोजगार के अवसर दिए जा रहे हैं।

मधुमक्खी पालन: मधुमक्खी पालन को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने 500 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। वर्ष 2005-06 की तुलना में शहद उत्पादन में अब 242 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसके निर्यात में 265 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मधुमक्खी

पालन, कम समय और कम लागत पर कृषि आधारित एक लाभदायक व्यवसाय है। वर्ष 2019-20 में मधु का निर्यात 59536.74 मीट्रिक टन था। मधुमक्खी पालकों को बैंक से लोन की सुविधा भी मिलती है।

मशरूम की खेती के साथ रोजगार: अक्सर कहा जाता है, कि स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है। आहार में बदलाव के कारण, मशरूम पोषण के मामले में एक बहुत ही स्वस्थ आहार है।

मशरूम की खेती के लिए कम पूंजी और जमीन की जरूरत होती है। ग्रीनहाउस में तापमान को व्यवस्थित करके, आप पूरे वर्ष रोजगार प्राप्त करके एक अच्छा लाभ कमा सकते हैं। मशरूम प्रोटीन, विटामिन और फाइबर से भरपूर होता है। इसलिए लोगों के बीच इसकी काफी मांग है। मशरूम की खेती से रोजगार सृजन करती ग्रामीण महिलाएं:



तस्वीर साभार: www.pravakta.com

मशरूम की खेती का प्रशिक्षण होना बहुत जरूरी है, जिसे नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र या राष्ट्रीय मशरूम केंद्र सोलन से प्राप्त किया जा सकता है।

वैज्ञानिक विधि से मछलीपालन: मछली उत्पादन में भारत का तीसरा और जलीय कृषि में दूसरा स्थान है। राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड के अनुसार, भारत में मत्स्य पालन 145 मिलियन लोगों को रोजगार देता है। 333.41 बिलियन टन मछली का निर्यात किया जाता है और सकल घरेलू उत्पाद में 1.07 प्रतिशत का

योगदान देता है। मछली पालन में पूंजी और श्रम की कम आवश्यकता होती है। इस वजह से इसमें लागत से ज्यादा आमदनी होती है। मत्स्य पालन से संबंधित उद्योगों जैसे ग्रेडिंग, पैकिंग, सुखाने और पाउडरिंग, अचार बनाने, प्रसंस्करण में प्रशिक्षण कृषि विश्वविद्यालय, भाकृअनुप -केंद्रीय मत्स्य शिक्षा अनुसंधान संस्थान, मुंबई और केंद्रीय मत्स्य प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चि से पेशेवर रूप से प्राप्त किया जा सकता है।



बागवानी वैज्ञानिक: लोगों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए फल, फूल व सब्जियों की निरंतर मांग बढ़ती जा रही है। बागवानी के उत्पादों की दैनिक मांग होने के कारण कम क्षेत्रफल में भी सब्जियों एवं फलों जैसे केला, नीबू पपीता एवं पान की खेती करके अधिक लोगों को रोजगार एवं आमदनी मिल सकती है। फल, फूलों व सब्जियों की कटाई-छंटाई श्रेणीकरण, पैकिंग, मार्केटिंग, रखरखाव आदि क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं होती हैं।

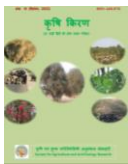
औषधीय और सुगन्धित पौधों की खेती: लहसुन, प्याज, अदरक, पुदीना और चौलाई जैसी सब्जियां पौष्टिक होने के साथ-साथ औषधीय गुणों से भी भरपूर हैं। इसी कारण इनसे आयुर्वेदिक औषधियां व खाद्य उत्पाद बनाये जाते हैं। इसके साथ-साथ इनसे संबंधित रोजगार करके अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है।

कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण के क्षेत्र में रोजगार: कृषि से प्राप्त हुए उत्पादों का प्रसंस्करण एवं परिरक्षण करके जैसे गन्ने से गुड़, मूंगफली से स्वादिष्ट नमकीन, फलों से जूस, कैडी, जैम, जेली, आलू व केले से चिप्स, दूध से दूध का पाउडर, दही, छाछ मक्खन, घी, पनीर, टमाटर व आम से अचार व चटनी तैयार करके तथा मूल्य संवर्धन से रोजगार स्थापित किया जा सकता है।

कृषि क्षेत्र में सरकारी योजनाएं: सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ और परियोजनाएँ चलाई जा रही

हैं। ग्रामीण क्षेत्र में जलवायु सुधार योजनाएँ, आधुनिक खेती तकनीक, कौशल विकास कार्यक्रम और ग्रामीण उद्यमिता की पहचान बना रही हैं। इन पहलों का उद्देश्य है कि कृषि क्षेत्र में रोजगार के अवसर स्थायी और समृद्धिशील रहें। युवाओं को आधुनिक कृषि तकनीकों के बारे में जानकारी देने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से कृषि उद्यम के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इनमें मशरूम उत्पादन, मुर्गीपालन, बकरी पालन, मछलीपालन, वर्मीकम्पोस्टिंग, बेकरी, मधुमक्खीपालन, आधुनिक मशीनों से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नाम लिया जा सकता है। युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए केन्द्र सरकार इकाई लगाने के लिए सब्सिडी के तहत भारी छूट दे रही है। इसके साथ ही साथ कृषि उत्पादों के विपणन में आसानी एवं फसल उत्पादन के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए खाद्य प्रसंस्करण के लिए जरूरी बुनियादी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं।

➤ **कृषि क्षेत्र में नौकरियां:** भारत में स्नातक स्तर पर 13 विषयों और स्नातकोत्तर स्तर पर 95 से अधिक विषयों में शिक्षा की सुविधा के साथ कृषि में शिक्षा का एक बड़ा नेटवर्क है। जिनके द्वारा छात्रों की डिप्लोमा, डिग्री, मास्टर और डॉक्टरेट स्तर पर कृषि शिक्षा प्रदान कर रही है। एक अनुमान के अनुसार कृषि विज्ञान में प्रति वर्ष 3,15,000 पेशेवर रूप से योग्य व्यक्ति, जिनमें लगभग



- 15000 स्नातक, 11,000 परास्नातक और 2,500 पीएच.डी. को कृषि व्यवसाय में हर साल जोड़ा जाता है। आईसीएआर से जुड़े विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली डिग्रियां विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा के लिए अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त और स्वीकृत हैं। स्नातक डिग्री कार्यक्रम न्यूनतम 4 वर्ष की अवधि का है। कुछ कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा दो वर्षीय डिप्लोमा और लघु अवधि के प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं। कृषि अधिकारी
- कृषि विकास अधिकारी
 - सहायक बागान प्रबंधक
 - कृषि तकनीशियन
 - पौधा प्रजनक
 - पशुपालक
 - कृषि इंजीनियर
 - रेशम कृषक
 - खाद्य सुरक्षा अधिकारी
 - फूड टेक्नोलॉजिस्ट
 - अनुसंधान सहायक
 - विपणन कार्यकारी
 - कृषि अनुसंधान वैज्ञानिक
 - कृषि सलाहकार
 - क्लिनिक और कृषि सेवा केंद्र खोल